

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 12, (मई, 2025)
पृष्ठ संख्या 24-25

आधुनिक खेती के विरुद्ध प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना



मनोज कुमार¹, डॉ. चंद्र शेखर प्रजापति² एवं राघवेंद्र सिंह³

¹शोध छात्र, कृषि प्रसार व संचार विभाग,

³स्नातकोत्तर शोधकर्ता, कृषि प्रसार और संचार विभाग,
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

मेरठ, उत्तर प्रदेश

²सहायक प्रोफेसर, कृषि और प्राकृतिक विज्ञान संस्थान,

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – mkpaswan97@gmail.com

परिचय

भारत में कृषि एक ऐसी धारा है, जो न केवल हमारी अर्थव्यवस्था को चलाती है, बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। समय के साथ, खेती की तकनीक में भी बदलाव आया है। जहाँ पहले हमारे पूर्वज प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग करते हुए खेती करते थे, वहीं आजकल आधुनिक तकनीकों और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग व्यापक रूप से बढ़ गया है। हालांकि, इस आधुनिक खेती के साथ कई पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इस संदर्भ में, प्राकृतिक खेती की ओर वापसी का विचार एक महत्वपूर्ण समाधान के रूप में सामने आया है। इस लेख में हम चर्चा करेंगे कि क्यों और कैसे आधुनिक खेती के मुकाबले प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना आवश्यक है।

आधुनिक खेती के प्रभाव और समस्याएँ

आधुनिक खेती में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, और हाइब्रिड बीजों का उपयोग बड़े पैमाने पर होता है। हालांकि यह तकनीक उच्च उत्पादकता प्रदान करती है, लेकिन इसके कई नकारात्मक परिणाम भी हैं:

1. **मृदा की गुणवत्ता में गिरावट:** रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की

जैविक गुणवत्ता में कमी आती है। इससे मिट्टी की उपजाऊ शक्ति घटने लगती है और यह भविष्य में खेती के लिए अनुपयुक्त हो सकती है।

2. **जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय नुकसान:**

रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग से जलवायु परिवर्तन को बढ़ावा मिलता है। ये रासायन वायुमंडल में घुलकर ग्रीन हाउस गैसों का निर्माण करते हैं, जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। इसके अलावा, जल स्रोतों में रासायन मिल जाने से जल प्रदूषण की भी समस्या उत्पन्न होती है।

3. **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** आधुनिक खेती से उत्पादित खाद्य पदार्थों में रासायनिक अवशेष होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। इन रासायनों के कारण कैंसर, हार्मोनल असंतुलन, और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

4. **किसान का कर्ज और आर्थिक दबाव:** आधुनिक खेती में लागत बहुत अधिक होती है, जैसे रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, और महंगे बीजों की खरीदारी। इससे किसानों पर आर्थिक दबाव बढ़ता है, जो कभी-कभी कर्ज के जाल में फँसने का कारण बनता है।

प्राकृतिक खेती के लाभ

प्राकृतिक खेती एक पारंपरिक और पर्यावरण अनुकूल कृषि पद्धति है, जो बिना किसी बाहरी रासायनिक या सिंथेटिक सामग्री के कृषि कार्य करती है। इसमें केवल प्राकृतिक संसाधनों का ही उपयोग होता है। इसके अनेक लाभ हैं:

1. मृदा की उर्वरता बनाए रखना: प्राकृतिक खेती से मिट्टी की उर्वरता और जैविकता बनी रहती है, क्योंकि इसमें रासायनिक उर्वरकों का उपयोग नहीं होता। यह मृदा में जैविक तत्वों को बनाए रखता है और उसकी गुणवत्ता को बढ़ाता है।

2. जलवायु परिवर्तन पर नियंत्रण: प्राकृतिक खेती जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद करती है। यह वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके ग्लोबल वार्मिंग को नियंत्रित करती है और जल स्रोतों को प्रदूषण से बचाती है।

3. स्वस्थ भोजन का उत्पादन: प्राकृतिक खेती से उत्पादित खाद्य पदार्थ रासायनिक अवशेष से मुक्त होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित और पौष्टिक होते हैं। यह किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के लिए फायदेमंद होता है।

4. आर्थिक फायदे: प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं होता, जिससे लागत में कमी आती है। इसके अलावा, यह किसानों को अधिक आत्मनिर्भर बनाता है, क्योंकि वे अपनी जमीन पर जैविक खाद और कीटनाशक उत्पादित कर सकते हैं।

5. जैव विविधता का संरक्षण: प्राकृतिक खेती पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करती है और जैव विविधता को बढ़ावा देती है। इसमें प्राकृतिक कीटों और पौधों के बीच सामंजस्य होता है, जो पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखता है।

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के उपाय

1. किसानों को प्रशिक्षण देना: किसानों को प्राकृतिक खेती की विधियों के बारे में प्रशिक्षित करना आवश्यक

है, ताकि वे रासायनिक खेती से प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ सकें। इसके लिए सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं को जागरूकता कार्यक्रम चलाने चाहिए।

2. सरकारी प्रोत्साहन और सब्सिडी: सरकार को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाओं और प्रोत्साहन की आवश्यकता है। जैसे कि प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले किसानों को ब्याज मुक्त ऋण, खाद्य सुरक्षा प्रमाणपत्र, और सब्सिडी प्रदान करना।

3. समुदाय आधारित खेती: गांवों और किसानों के समुदायों में प्राकृतिक खेती के मॉडल को लागू करना महत्वपूर्ण है। इससे छोटे किसानों को सहायता मिल सकती है और वे मिलकर प्राकृतिक खेती को अपनाने में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं।

4. प्राकृतिक खाद और कीटनाशकों का विकास: प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाले खाद और कीटनाशकों का निर्माण और विकास करना जरूरी है। इसके लिए शोध और नवाचार को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि किसानों के पास अधिक प्रभावी और सस्ती सामग्री हो।

5. जागरूकता और प्रचार-प्रसार: उपभोक्ताओं के बीच प्राकृतिक खेती के लाभों को प्रचारित करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब उपभोक्ता रासायनिक मुक्त, सुरक्षित और स्वस्थ खाद्य पदार्थों को प्राथमिकता देंगे, तो यह प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में मदद करेगा।

निष्कर्ष

आधुनिक खेती के नकारात्मक प्रभावों के मद्देनजर प्राकृतिक खेती एक सशक्त और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से लाभकारी विकल्प के रूप में उभर कर सामने आई है। यह न केवल किसानों के लिए आर्थिक दृष्टि से फायदेमंद है, बल्कि पर्यावरण और समाज के लिए भी दीर्घकालिक समाधान प्रदान करती है। प्राकृतिक खेती का बढ़ावा देना समय की आवश्यकता है, ताकि हम अपनी भूमि, जल, और पर्यावरण को बचा सकें और आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित कर सकें।